RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

21वीं सदी के बदलते परिवेश मे चीनी सामरिक घेराबंदी का भारत पर प्रभाव

डॉ. संजय कुमार शर्मा
व्याख्याता राजनीति विज्ञान

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 July 2019

Keywords
कूटनीतिक, मैकमोहन, रेड कॉरिडोर, हब्बन टोटा, पैगोडा प्वाइंट.

***Corresponding Author**
Email: sanjayyy0786[at]gmail.com

ABSTRACT

चीन के **कूटनीतिक संस्थान चाइना इंटरनेशनल फॉर स्ट्रेटिजिक स्टडीज वेबसाइट** से जारी एक लेख मे **चीनी विशेषज्ञ झान लुई** का अपनी सरकार को भारत को 20 से 30 टुकड़ों में बांटने की सलाह देने और उसके बाद भारतीय वायुसीमा में चीनी वायुयानों के माध्यम से पैकेट गिराना, भारतीय सीमा का उल्लंघन कर घुसपैठ करना आदि कार्य निश्चित रूप से चीन के विस्तारवादी इरादों को दर्शाते है। 1962 का युद्ध भी इसी पृष्ठभूमि से शुरू हुआ, जो कि प्रत्यक्ष हमले के रूप में प्रकट हुआ। उसके बाद भी चीन निरतंर भारत को अस्थिर करने में लगा रहा। जल–थल से भारत को घेराबंदी करके एक बार पुनः भारत को युद्ध के लिए उकसाने में लगा हुआ है।

1. स्थल सीमा में चीनी घेराबंदी

भारत एवं चीन के मध्य (पूर्वी, पश्चिमी व मध्य क्षेत्र) सीमा 4050 किमी. लंबी है, जिससे पूर्वी क्षेत्र में अरूणाचल प्रदेश, मध्य क्षेत्र में उत्तराखंड, हिमाचय प्रदेश एवं उत्तर पश्चिम के लद्दाख, कश्मीर इसकी सीमा से लगे हुए है। पूर्वी क्षेत्र में 1100 किमी. लंबे रेखा मैकमोहन रेखा कहलाती है, जो तिब्बत को अरुणाचल प्रदेश से अलग करती है। इसके अंतर्गत 5000 वर्ग किमी. का क्षेत्र विवादग्रस्त है। पश्चिमी सीमा में 1600 किमी. की लंबी जम्मू–कश्मीर सीमा रेखा सिक्यांग को तिब्बत से अलग करती है। इस क्षेत्र में 25000 वर्ग किमी. क्षेत्र विवादित है, जिनमें पेनाग झील के निकट अक्साई चीन तथा चिंग चेनक घाटी शामिल है। इस क्षेत्र में पाकिस्तान के पाक अधिकृत कश्मीर का 5180 वर्ग किमी. क्षेत्र गैर–कानूनी रूप से चीन को दे रखा है। मध्य क्षेत्र में 650 किमी. सीमा चीन में लगती है। इस क्षेत्र का 1600 वर्ग किमी. भू–भाग विवादित है। भारतीय सीमा में लगे तिब्बत को हथियाने के बाद चीन ने पूर्णरूप से उस पर नियंत्रण स्थापित कर रखा है। चीन तिब्बत के सुरक्षात्मक महत्व को देखते हुए वहाँ से अपनी गतिविधियों का संचालन करता है।[1]

विगत कुछ वर्षों से चीन भारत संबंधों में पानी मुख्य मुद्दे के रूप में उभर रहा है। यह दोनों देशों के मध्य आपसी विवाद का मुख्य कारण बन रहा है। गंगा को छोड़कर एशिया की अन्य बड़ी नदियों का उद्गम स्थल चीन नियंत्रित तिब्बत क्षेत्र में है। खेती एवं बड़े उद्योगों के लिए चीन एवं भारत दोनों देशों की जल की मांग बढ़ती जा रही है। तिब्बत से निकलने वाली अधिकाशं नदियों पर चीन बांध बनाने मे जुटा है। केवल दो नदियाँ सिंधु (पाकिस्तान होते हुए भारत पहुँचती है।) एवं सालवीन (म्यांमार एवं थाइलैंड से गुजरती है।) पर उसने इन पर कोई योजना शुरू नहीं की है। चीन ब्रह्मपुत्र नदी का रूख भी अपनी ओर मोड़ना चाहता है। तिब्बत में यारलंग तसाग्यों और चीन में यैलजैम्बू के नाम से प्रसिद्ध नदी वह नदी पूर्वोतर भारत के राज्यों एवं बांग्लादेश को जीवन प्रदान करती है। इस परियोजना के शुरू होते ही पूर्वी भारत एवं बांग्लादेश का पर्यावरण संतुलन बिगड़ जाएगा। नदी का रुख बदलने के लिए चीन परमाणु विस्फोट का सहारा लेना चाहता है। तिब्बत के पानी को उत्तर की ओर ले जाने के पीछे चीनी नीति का मुख्य उद्देश्य तीन विशाल बांध बनाना है, जो कि चीन की दीवार के बाद इंजीनियरिंग के क्षेत्र में श्रेष्ठ नमूना होगा। चीन की जल बिजली योजनाएँ यह याद दिलाने के लिए के लिए काफी है कि दोनों देशों का मुख्य मुद्दा तिब्बत आज भी बरकरार है। बड़े बांध, बैराज, नहरें और सिंचाई के पानी को एक राजनीतिक हथियार के रूप में बदल सकते हैं जो युद्ध के दौरान विध्वंस मचा सकता है।[2]

नेपाल जिसे भारत ने कभी पराया नहीं माना वह कुछ वर्षों से भारत विरोध का अड्डा बना हुआ है, आर्थिक विकास के नाम पर चीन नेपाल की माओवादियों का गढ़ बन चुका है। विकास के नाम पर चीनी सरकार ने नेपाली अफसरशाही, राजनीति, मीडिया एवं बुद्धिजीवियों को भारत के खिलाफ जहर से लबालब भर दिया है। नेपाली माओवादी भारतीय नक्सवादियों के साथ मिलकर दक्षिण भारत तक **एक रेड कोरिडोर** का निर्माण करना चाहते है।[3]

चीन–भारत पर नजर रखने के लिए नेपाल में तेजी से घुसपैठ करता जा रहा है। पिछले तीन वर्षों में नेपाल में 20 हजार चीनी नागरिकों ने घुसपैठ की हैं चीनी नागरिक नेपाल के कोने–कोने में फैल गए हैं। भारतीय सीमा से सटे इलाकों में भी उनके कई ठिकानें बन गए है। घुसपैठियों को चीन की खुफिया **एजेंसी ग्वानवू** ने प्रशिक्षित किया है। घुसपैठ की यह योजना 11 वर्ष पूर्व **राष्ट्रपति झियांग जेमिन** के कार्यकाल में तैयार की गई और प्रचंड के कार्यकाल में इसे अमलीजामा पहनाया गया। अपनी कूटनीति के जरिए चीन ने नेपाल मीडिया सेंटर भी स्थापित किया है। चीन की यह हरकत भारत

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के लिए खतरा बनने जा रही है। चीन नेपाल का प्रयोग भारत पर नजर रखने के लिए कर रहा है।

भारतीय सुरक्षा के लिए सबसे खरतनाक है–**चीन–पाकिस्तान का गठबंधन**। चीन द्वारा पाकिस्तान के साथ संबंध बढ़ाने के पीछे मुख्य कारण थे–(i) भारत की शक्ति को कमजोर करना, (ii) विश्व परिदृश्य में भारत की छवि को धूमिल करना, (iii) हथियारों के व्यापार हेतु नया बाजार प्राप्त करना। (iv) अमरीका के बढ़ते प्रभाव पर अकुंश लगाना। 1962 के बाद से ही चीन भारत को घेरने के लिए बनी नीतियों में पाकिस्तान ने अलग भूमिका निभाई। चीन पाकिस्तान की हर उस नीति का समर्थन करने लगा, जो कि भारत विरोधी या फिर भारत को क्षति पहुँचा सके। भारत के विरुद्ध बिना हथियार चलाए ही, हथियारों की आपूर्ति के माध्यम से चीन भारत के साथ युद्ध छेड़े हुए है। पाकिस्तान के आर्थिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक, तकनीकी, सैन्य, अस्त्र–शस्त्र आदि सभी क्षेत्रों के विकास में चीन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपनी रणनीति के तहत् चीन ने न केवल असंख्य मात्रा में हथियार दिए, बल्कि सभी नियमों की अनदेखी कर परमाणु तकनीकी संशोधन, परिष्करण, प्रशिक्षण, कलपुर्जे तथा उपकरण भी प्रदान किए।[4]

कुछ माह पूर्व से मुनाबाव–खोखरापार के रास्ते भारत–पाकिस्तान रेल संपर्क मार्ग के लिए पाकिस्तान सरकार सीमा से सटाकर नया रेलवे स्टेशन बना रही है। जिसका ठेका पाकिस्तान सरकार द्वारा एक चीनी कंपनी को दिया गया है। मुंबई हमले की पृष्ठभूमि में चीन संयुक्त राष्ट्र संघ में दो बार अपने वीटो का प्रयोग कर भारत के उस प्रस्ताव को रोक चुका है जिसका उद्देश्य पाकिस्तान के जमात उल दावा को आतंकवादी संगठन घोषित करना था। जैश के मुखिया अजहर मसूद और लश्कर के आजम चीमा पर संयुक्त राष्ट्र संघ की पांबदियाँ लगवानें के प्रयासों के बाद भी ब्रिटेन के साथ मिलकर चीन ने भारतीय इरादों पर पानी फेर दिया। भारत को हजार घाव देकर उसे टुकड़ों में बाँटना पाकिस्तान का घोषित एजेंडा है और इस एजेंडे को अमलीजामा पहनाना चीन की घोषित नीति है। पाकिस्तान स्थित आतंकी गुट भी चीनी हथियारों पर भरोसा कर रहे है। जिनमें एके–56 राइफलों से लेकर टाइप 86 ग्रेनेड भी शामिल है। इनका निर्माण चीन की नोरिक फर्म कर रही है। ग्वादर बंदरगाह को सी पोर्ट के रूप में विकसित कर चीन–भारत की समुद्री सीमा तक पहुँच गया है।[5]

तीन ओर से भारतीय भूमि से घिरे बांग्लादेश को भी चीन आर्थिक सैनिक सहायता देकर अपने नियंत्रण में लेने हेतु प्रयासरत् है। अवैध बांग्लादेशियों का असम में प्रवेश और जिहादी आतंकवाद जैसे मुद्दों पर भारत एवं बांग्लादेश की बीच के विवाद को चीन ने अपने सामरिक फायदे के लिए भुनाया है। चीन बांग्लादेश के बीच 2005 में शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु समझौता हो चुका है, जिसके तहत् बांग्लादेश में परमाणु उर्जा संयंत्र स्थापित किया जाएगा। बांग्लादेश को सबसे अधिक हथियार आपूर्ति चीन से ही होती है। बांग्लादेश का कॉक्स बाजार एवं चटगाँव को चीन सी हार्बर के रूप में विकसित करने में लगा है। यहाँ से चीन बांग्लादेश के प्राकृतिक भंडारों पर शिकंजा मजबूत करने के साथ ही हिंद महासागर तक आसानी से आ सकेगा।

2. समुद्री सीमा से चीनी घेराबंदी

विगत दो दशकों से चीन की भारतीय उपमहाद्वीप में उपस्थिति निरंतर बढ़ती जा रही है। चीन यह भली–भाँति जानता है कि अफ्रीका एवं पश्चिमी एशिया व मध्य एशिया के उर्जा संसाधनों के बल पर ही वह अपनी आर्थिक प्रगति सुनिश्चित कर सकता है। पश्चिमी एशिया में तेल की कूटनीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अमरिकी प्रभुत्व वाले इलाके से तेल का बहाव निर्बाध रूप से चीन की तरफ होता रहे। इसलिए चीन खाड़ी देशों से बेहतर द्विपक्षीय संबंध बनाने पर ज्यादा ध्यान दे रहा है। चीन का 60 प्रतिशत से अधिक तेल फारस की खाड़ी के रास्ते से आता है। अफ्रीका में चीन भारी मात्रा में निवेश कर रहा है। वर्तमान में दोनों का व्यापार 30 बिलियन डॉलर से अधिक का है। चीन को अपने विकास के लिए तेल, गैस, टिंबर, अयस्क जैसे संसाधनों की आवश्यकता है और अफ्रीका के प्राकृतिक भंडारों पर चीन की नजर टिकी हुई है। पश्चिमी एशिया एवं अफ्रीका में अपने हितों की पूर्ति के लिए जरूरी है कि चीन का हिंद महासागर से बिना किसी रोकटोक आवागमन होता रहें। मलक्का की खाड़ी और हिन्द महासागर से चीन का अधिकांश व्यापार होता है।[6]

हिंद महासागर पर प्रभुत्व बढ़ाने हेतु चीन ने भारत के चारों ओर एक चक्रव्यूह बना रखा है, जिसमें चीन पाकिस्तान को एक कड़ी के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। हिन्द महासागर तक पहुँच बनाने के लिए चीन पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को आधुनिक तकनीकी द्वारा सी पोर्ट के रूप में विकसित कर चुका है। चीन की योजना पाकिस्तान के साथ मिलकर ईरान तथा दक्षिण अफ्रीका से क्रूड ऑयल आयात करने के साथ ही अपने तेल शिपमेंट को आयात स्थिति के लिए बचाने की है। ग्वादर सी पोर्ट स्टेट ऑफ हार्मुज जलडमरू के पास है और यहाँ से विश्व का 40 प्रतिशत तेल पास होता है। अफ्रीका के साथ व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए सबसे सुलभ एवं आसान मार्ग पाकिस्तान ही प्रदान कर सकता है।[7]

समुद्री क्षेत्र में दखल के उद्देश्य से चीन ने श्रीलंका के **हब्बन टोटो** को सी हार्बर के रूप में विकसित करने के लिए श्रीलंका से 2007 में समझौता किया। श्रीलंका के दक्षिण के तट पर स्थित हब्बन टोटा में 18 अरब डॉलर की सहायता से बन रही यह परियोजना 15 वर्षों में पूरी होगी। चीन श्रीलंका को आर्थिक, कूटनीतिक एवं सामरिक सहायता देकर अपना मकसद पूरा करना चाहता है। वर्षो से चले आ रहे

श्रीलंका सरकार और लिट्टे के संघर्ष में लिटटें के दमन में चीन ने श्रीलंका सरकार की पूरी सहायता प्रदान की।[8]

चीन को हिंद महासागर तक पहुँचाने में म्यांमार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चीन ने **सितवे नामक** स्थान पर सी हार्बर बना रखा है। कोको द्वीप व अन्य द्वीपों को म्यांमार से पट्टे पर लेकर वहाँ शक्तिशााली संचार व खुफिया तंत्र विकसित कर रखा हैं। बंगाल की खाड़ी में स्थित यह कोकोद्वीप भारत के केद्रंशासित प्रदेश अंडमार निकोबार द्वीप समूह से केवल 18 किमी. की दूरी पर स्थित है।[9] इस द्वीप से भारतीय नौ सैनिक गतिविधियाँ पूर्वी नौ सैनिक कमान, बंगाल की खाडी और उडीसा के चांदीपुर स्थित मिसाइल टेस्टिंग रेंज पर चीन की ओर से जासूसी करने की पुष्टि हो चुकी है। कोको द्वीप के अलावा मानओंग, हांझी, जादेत्की और संगथित द्वीप पर चीन ने शक्तिशाली रडार एवं इलेक्ट्रोनिक्स एंटीना एवं संचार का केन्द्र बना रखा हैं म्यांमार का **पैगोडा प्वाइंट** चीन का महत्वपूर्ण सप्लाई केंद्र बन चुका है। पिछले दो दशकों से चीन ने म्यामांर को मजबूत सैनिक आर्थिक, राजनीतिक गठबंधन में जकड रखा है।[10]

चीन हिंद महासागर में अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए नौसेना में वृद्धि करता जा रहा है, साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप से लगे राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में लेता जा रहा है। चीन की नौसेना जो कभी तीनों सेनाओं में सबसे कमजोर मानी जाती थी आज चीनी नौसेना अमरीका व रूस के बाद दुनिया की तीसरी नंबर का सर्वश्रेष्ठ सेना बताई जा रही है। चीन पनडुब्बियों के बेड़े बैलिस्टिक मिसाइलों तथा जी.पी.एस. ब्लाकिंग जैसी आधुनिक प्रणाली से लैस है। इस दशक के अंत तक वह विमान वाहक पोत बनाने में सक्षम होगा, क्योंकि चीन इसे समुद्री हितों की रक्षा हेतु अपरिहार्य समझता है। चीनी नौसेना गुणवत्ता और संख्या दोनों ही दृष्टि से भारतीय सेना से श्रेष्ठ है। चीन चाहता है कि हिंद महासागर में उसका व्यापार निर्बाध रूप से होता रहे। इन जलमार्गों में भारतीय नौसेना की उपस्थिति का सामना करने के लिए पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, मालदीव एवं म्यांमार में अपने अड्डे बनाकर एवं अपनी नौसेना में वृद्धि करके भारत के समुद्र मार्ग से भी घेराबंदी कर चुका है।[11]

3. आर्थिक क्षेत्र में चीनी घेराबंदी

भारत, चीन के मध्य तेजी से बढते आर्थिक व्यापारिक संबंध विश्लेषकों के लिए यह प्रश्न छोडतें रहे हैं कि आने वाले समय में भारत चीन एक–दूसरे के प्रतिद्वंद्वी होंगे या सहयोगी? शंकाओं से घिरे संबंधों का असली स्वरूप धीरे–धीरे भारत के सामने उभरने लगा हैं, जबकि भारत के हर छोटे–बडे कस्बे और शहर की दुकानें मेड इन चाइना के उत्पादों से पटने लगीं। मंदी के दौर में चीनी सरकार अपने कई उत्पादों को सस्ते दामों में बेचने के लिए भारतीय बाजार ढूँढनें का अभियान चलाती रही। भारतीय उत्पादों के मुकाबले 70 प्रतिशत तक सस्ते चीनी उत्पादों की भारत में डंपिग हो रही है जिससे छोटे एवं मध्यम दर्जे के उत्पादों को भारी नुकसान हो रहा है। **इनमें खाद्य प्रसंस्करण, बिजली का सामान, वेल्डिंग, मशीनें, प्रिंटिंग मशीनरी, हैवी इंजीनियरिंग, केमिकल, धातु उद्योग** जैसे नाजुक क्षेत्र है। चीनी खिलौना उद्योग के हमले से भारत की सैकड़ों कम्पनियाँ एवं प्रिंटिंग प्रेस बंद पड़ी हुई है। भारत के बाजार सस्ते चीनी मोबाइल फोनों से भरे पड़ें है।[12] सस्ते होने के कारण धडल्ले से बिकने वाले इन मोबाइल फोनों का खतरनाक पक्ष यह है, कि इनमें अतंरराष्ट्रीय नियमों की अनेदखी करते हुए या तो आई.एम.आई. कोड उपलब्ध नहीं या फिर कई सौ फोनों का एक ही नंबर है। इसी नंबर के आधार पर यह सुनिश्चित होता है कि कौन–सी कॉल किस नंबर से की गई है? भारतीय बाजार में ऐसे लगभग तीन करोड़ मोबाइल मौजूद है और प्रतिवर्ष आठ लाख नए फोन आ रहे है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने कई आंतकवादियों के कब्जे से ऐसे ही फोन बरामद किए हैं, जिनसे की गई कॉल करने वाले की जगह को पहचानना संभव नहीं है। इतना ही नहीं भारत की सबसे विस्तार वाली और सरकारी दूरसंचार कंपनी बी.एस. एन.एल. के जी.एस.एम. सर्किट विस्तार योजना में भाग लेने के लिए दो चीनी कंपनियों ने टेंडर भी डाले है।[13]

निष्कर्ष

जल, थल से भारत की घेराबंदी करके एवं आर्थिक रूप से भारत को कमजोर करक चीन एक बार पुनः 1962 के जैसे हालात पैदा कर रहा है। चीन द्वारा सीमा उल्लंघन के बढ़ते मामले और तानव युद्ध की काली छाया की ओर संकेत कर रहे हैं। **हॉवर्ड विश्वविद्यालय** के विद्वान् **रोडरिक मैक्फरकुअर** के अनुसार माओं का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य चीन की निरंकुशता को भारत के लोकतंत्र से श्रेष्ठ साबित करना था। माओं ने जिस जबर्दस्त हमले के साथ भारत को करारी शिकस्त दी उससे अंतर्राष्ट्रीय तबके में चीन का कद ऊँचा हुआ और माओं की शक्ति में बढोतरी हुई। दशकों बाद भारत–चीन की जोड़ी की फिर चर्चा होने लगी, जिससे चीन बेहद चिढ़ा हुआ है।

इसके अतिरिक्त उसके दाहिने हाथ का काम करने वाले पाकिस्तान की बढ़ती अप्रसांगिकता भी चीन की बेचैनी बढ़ा रही है। अमरीकी एवं पश्चिमी के साथ बढतें तालमेल से चीन चिंतित है। चीन की सभी चिंताएँ शांतिवादी भारत के खिलाफ युद्ध से ही दूर होती है। मंदी से बुरी तरह प्रभावित चीन के लिए जापान या पश्चिमी देशों के खिलाफ कदम संभव नहीं है। ऐसे में उसके लिए सबसे नरम विकल्प भारत और पूर्वोत्तर में उसकी जमीन पर कब्जा, चीन के बहुआयामी राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

1. कुमार. चचंल, ''भारत चीन संबंध और शांति के लिए रणनीतिक भागीदारी'' वर्ल्ड फोकस, जुलाई, 2013 पृ. 103
2. वैदिक. वेद. प्रकाश, ''चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत'' हिन्दुस्तान टाईम्स, 16 मई 2015
3. दैनिक भास्कर, 15 दिसम्बर 2015
4. राजस्थान पत्रिका, 7 सितम्बर 2017
5. पाठक. कविता, ''अब चीन की बारी!'' राजस्थान पत्रिका, 5 सितम्बर 2017
6. सिंह.एस. कुमार, ''भारत और चीन के कुटनीतिक संबंध'', प्रतियोगिता दृष्टि, जनवरी, 2012
7. चतुर्वेदी. सुधाकर, ''उर्जा क्षेत्र में चीनी घुसपैठ के इरादे'' अमर उंजाला, वाराणसी, 8 सित. 2009 पृ. 12
8. रानाडे. जयदेवा, ''दक्षिण चीन सागर में चीन के हित'' वर्ल्ड फोकस, नई दिल्ली, दिसंबर, 2016
9. कोली. एम. सी. ''प्रमुख देशों की विदेश नीतियाँ'' साहित्यागार पृ. 181
10. सिविल सर्विसेज टाईम्स– अगस्त 2012, पृ. 118
11. कुमार. राजेश, ''भारत चीन; सामुदिक राजनयिक संलग्नता गतिकी, वर्ल्ड फोकस , दिसम्बर, 2016 पृ. 52,53
12. कुमार. राजेश, उपर्युक्त, पृ. 55–56
13. शौरी. अरूण, ''भारतीय कछुआ या चीनी खरगोश : सुपर पावर?'' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010 पृ. 66,70,81

RRIJM 2015, All Rights Reserved